समाजीकरण के जैविक आधार
(Biological Basis of Socialization)

विश्व में मनुष्य मात्र ही एक ऐसा जैविक प्राणी है जिसका समाजीकरण होता है। मनुष्य की तरह अन्य जीव भी जैविक प्राणी है पर इनका समाजीकरण नहीं होता है। मनुष्य में कुछ विशेष जैविक गुण अवश्य है, जिनके कारण उनका समाजीकरण होता है। यहाँ कुछ जैविक विशेषता है जिनके द्वारा मनुष्य का समाजीकरण होता है जो निम्नलिखित है:—

(1) सहजप्रवृत्तियों की कमी :—

सहजप्रवृत्तियाँ एक प्रकार का जटिल व्यवहार है जो जैविक रूप से निर्धारित होता है। जानवरों एवं पक्षियों की यह एक प्रमुख विशेषता है। जैसे - पक्षियों के अन्तर्गत घोंसला बनाने की प्रवृत्ति पायी जाती है। पक्षियों में यह गुण जैविक आधार पर एक पीढ़ी से - दूसरी पीढ़ी में स्वतः हस्तान्तरित होता रहता है। यह एक ऐसी प्रवृत्ति है, जो सीखने की प्रवृत्ति में बाधक के रूप में कार्य करती है। मनुष्य इसलिए कुछ सीख पाता है, क्योंकि उसमें इस ढंग की सहजप्रवृत्तियाँ नहीं पायी जाती है। मनुष्य की विशेषता जैविक विशेषता या प्रेरणा है। प्रेरणा व्यक्तियों को कुछ करने के लिए प्रेरित करता है। यह जैविक स्तर पर निर्धारित होने वाला व्यवहारों का प्रतिमान नहीं है।

(2) अन्तःक्रियात्मक आवश्यकताएँ :—

मनुष्य की यह विशेषता है कि वह दूसरे लोगों के साथ मिलना जुलना पसन्द करते है। कोई भी व्यक्ति अकेले स्वतन्त्र ढंग से जीना पसन्द नहीं करता है

जिस प्रकार जानवर अलग होकर जीवित रहता है, उसी प्रकार मनुष्य जीवित रहना नहीं चाहता है। मनुष्य के अन्दर ऐसे जैविक गुण है, जो उन्हें एक-दूसरे पर आश्रित कर देते है। इसी प्रवृत्ति के कारण मनुष्य सीखता है। प्रयोग पर आधारित ऐसे बहुत सारे उदाहरण मिलते है, जिनसे यह प्रमाणित होता है कि जिन बच्चों को समाज से दूर छोड़ दिया जाता है अर्थात समाज से दूर जंगलों में छोड़ दिया जाता है, वे जानवरों के तरह ही व्यवहार करना सीख जाते है। चूंकि मनुष्य स्वभाव से ही सामाजिक प्राणी है, वह समाज में रहकर समाजीकरण के माध्यम से अपने समाज एवं संस्कृति के बारे में सीखता है।

(3) बाल्यावस्था की निर्भरता :—

विभिन्न प्राणियों की तुलना में शिशु अपने माता-पिता या परिवार के अन्य सदस्यों के ऊपर शारीरिक व मौलिक रूप से ज्यादा लम्बे समय तक निर्भर रहता है, इसी निर्भरता के कारण बालकों एवं अभिभावकों के बीच एक संवेगात्मक संबंध के कारण बच्चों का समाजीकरण काफी आसान हो जाता है।

(4) सीखने की क्षमता :—

मनुष्य की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि वह लम्बे समय तक किसी चीज को सीखता रहता है। मनुष्य में पायी जाने वाली बुद्धि उसकी विशिष्ट जैविक विरासत है।

(5) भाषा :—

मनुष्य की विशेषता यह है कि वह भाषा को सीख सकता है जिसके द्वारा वह अपने विचारों का आदान-प्रदान एक दूसरे से करता है।